**गुरु नानक – सबद ४७**

**जालि मोहु घसि मसु करि मति कागदु करि सारु ॥**

**रागु सिरिरागु, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, १६**

जालि मोहु घसि मसु करि मति कागदु करि सारु ॥
भाउ कलम करि चितु लेखारी गुर पुछि लिखु बीचारु ॥
लिखु नामु सालाह लिखु लिखु अंतु न पारावारु ॥१॥
बाबा एहु लेखा लिखि जाणु ॥
जिथै लेखा मंगीऐ तिथै होइ सचा नीसाणु ॥१॥ रहाउ ॥
जिथै मिलहि वडिआईआ सद खुसीआ सद चाउ ॥
तिन मुखि टिके निकलहि जिन मनि सचा नाउ ॥
करमि मिलै ता पाईऐ नाही गली वाउ दुआउ ॥२॥
इकि आवहि इकि जाहि उठि रखीअहि नाव सलार ॥
इकि उपाए मंगते इकना वडे दरवार ॥
अगै गइआ जाणीऐ विणु नावै वेकार ॥३॥
भै तेरै डरु अगला खपि खपि छिजै देह ॥
नाव जिना सुलतान खान होदे डिठे खेह ॥
नानक उठी चलिआ सभि कूड़े तुटे नेह ॥४॥६॥

**सार:** महत्वपूर्ण क्षणों में आगे बढ़ने से पहले ठहरकर शांति से सोचने से स्थिति को स्पष्ट रूप से समझने में मदद मिलती है। गहन चिंतन हमें ऐसे विकल्प चुनने में सहायता करता है जो हमारे मूल्यों के अनुरूप हों और हमें अखंडता और प्रामाणिकता से निहित कार्यों की ओर मार्गदर्शन कर सकें ।अक्सर सबसे अच्छे उत्तर शांत मन से चिंतन करने पर ही मिलते हैं।

जालि मोहु घसि मसु करि मति कागदु करि सारु ॥

सांसारिक मोह को जलाकर उसकी राख को स्याही में बदल दें। मन को काग़ज़ की तरह इस्तेमाल करें और उस पर सत्य का सार लिखें। यह जीवन में आत्म-परिवर्तन की उपमा है जिसमें बाहरी दिखावे को छोड़ सच्चाई को अपनाने पर जोर दिया गया है।

भाउ कलम करि चितु लेखारी गुर पुछि लिखु बीचारु ॥
प्रेम को कलम और चेतना को लेख नी की तरह उपयोग करें। अज्ञानता से जागरूकता की ओर ले जाने वाले साधकों से समझ प्राप्त करें और अपने विचारों को दर्ज करें। यह संदेश हर प्रयास में कर्तव्यनिष्ठा अपनाने के लिए प्रेरित करता है।

लिखु नामु सालाह लिखु लिखु अंतु न पारावारु ॥१॥
अपने विचारों को लिखें और उनको व्यक्त करते रहें क्योंकि प्रकृति की दिव्यता को समझने की कोई सीमा नहीं है। (१)

बाबा एहु लेखा लिखि जाणु ॥
हे ज्ञानी, आपने जो अंतर्दृष्टि प्राप्त की है उस समझ का उपयोग आत्म-चिंतन और विकास के लिए करें।

जिथै लेखा मंगीऐ तिथै होइ सचा नीसाणु ॥१॥ रहाउ ॥
ऐसे क्षणों में जहां निर्णय लेने की आवश्यकता होती है, विचारों से प्राप्त अंतर्दृष्टि के नेतृत्व में चुनाव से, सच्चाई ही प्रबल होती है। (१)(विराम)

जिथै मिलहि वडिआईआ सद खुसीआ सद चाउ ॥
ऐसी जगह जहाँ महानता पनपती है, स्थायी शांति और आनंद का साम्राज्य है।

तिन मुखि टिके निकलहि जिन मनि सचा नाउ ॥
जिनके मन सत्य से जुड़े होते हैं और जो आत्म-चिंतन करते हैं, उनकी उपस्थिति संतुलन और शांति की छवि होती है।

करमि मिलै ता पाईऐ नाही गली वाउ दुआउ ॥२॥
सद्गुण उद्देश्यपूर्ण कार्यों के माध्यम से विकसित होते हैं न कि केवल बातों या आशीर्वाद पाने की कामना से। (२)

इकि आवहि इकि जाहि उठि रखीअहि नाव सलार ॥

एक विचार उठता है और दूसरा विचार गुम हो जाता है, अपने मन को जागृत करें और उन श्रेष्ठ विचारों को ग्रहण करें जो उत्थान करते हैं।

इकि उपाए मंगते इकना वडे दरवार ॥

एक विचार भिखारी बना सकता है जबकि दूसरा किसी को भव्य दरबारों में उच्च स्थान पर बैठा सकता है।

अगै गइआ जाणीऐ विणु नावै वेकार ॥३॥

अंततः समझ में आता है कि आत्म-चिंतन और सच्चाई के बिना बाकी सब व्यर्थ है। (३)

भै तेरै डरु अगला खपि खपि छिजै देह ॥

अनिश्चित भविष्य के डर ने इतना व्यथित कर दिया है कि आपके शरीर की शक्ति लुप्त हो रही है।

नाव जिना सुलतान खान होदे डिठे खेह ॥

जो सुल्तान और सम्राट कहलाते थे वह भी अंत में मिट्टी में मिल गए।

नानक उठी चलिआ सभि कूड़े तुटे नेह ॥४॥६॥

नानक कहते हैं, आत्म-साक्षात्कार की उस अवस्था तक पहुंचो जहां सभी झूठे मोह और लगाव छोड़ दिए जाते हैं। (४)(६)

**तत्त्व:** गुरु नानक कहते हैं कि सद्गुणों को विकसित करने के लिए मेहनत और उद्देश्यपूर्ण कार्य की आवश्यकता होती है केवल इच्छा या खोखली रस्मों की नहीं। सच्चा परिवर्तन आत्म-जागरूकता से और भौतिक संपत्ति और अहंकार से अलग होने से आता है। इस स्थिति में एहसास होता है कि पहचान बाहरी मान्यता से जुड़ी नहीं है, इससे एक शुद्ध और स्वतंत्र जीवन जीने की प्रेरणा मिलती है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

**Oneness In Diversity Research Foundation**

**वेबसाइट:** OnenessInDiversity.com

**ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com**